कामला

निरुक्ति

कामान् लाति इति कामला।

That which diminish every desire (कामान्) is called as कामला.

कुत्सित + मल => vitiated मल is कामला.

दोष involved :- पित्त दोष.

निदान :-

Same as पाण्डु निदान.

Another निदान :-

पाण्डुरोगी तु योऽत्यर्थं पित्तलानि निषेवते।
तस्य पित्तमसृग्मांसम् दग्ध्वा रोगाय कल्पते॥

निदान :- कामला develops when a person indulges himself or herself in more पित्तकर निदान.

संप्राप्ति :-

पाण्डु (already present)
↓
more पित्तकर निदान
↓
vitiates पित्त दोष & रक्त and मांस धातु. } विदग्धता
↓
leads to कामला.

TYPES :-

According to हारित संहिता, it is of 08 types

1. वातज
2. पित्तज
3. कफज
4. सान्निपातज
5. मृत् भक्षण जन्य
6. कोष्ठ शाखाश्रय कामला
7. शाखाश्रय कामला
8. हलीमक.

BiophilicBAMS

लक्षण of कामला :-

हारिद्रनेत्र स भृशं हारिद्र त्वक् नख आननः।
रक्तपीतशकृन्मूत्रो भेकवर्णो हतेन्द्रियः॥

* Yellowish discoloration of नेत्र, त्वक्, नख and आनन (oral cavity).
* Reddish yellow discoloration of शकृत (feaeces) & मूत्र (urine)
* भेकवर्ण - भेक - yellow species of frog - yellowish discoloration of all body parts.

लक्षण of कोष्ठ शाखाश्रय कामला :-

दाह, विपाक दौर्बल्य सदनारुची कर्षितः।
कामला बहु पित्तैषा कोष्ठशाखाश्रय मता॥

when person suffers from कोष्ठशाखाश्रय कामला he has;

दाह - burning sensation due to पित्त
विपाक - Not properly digested / burning sensation while digestion
सदन - looseness of joints
अरुचि - Anorexia
कर्षित - Emaciation.

* कोष्ठ शाखाश्रय कामला is also called as बहुपित्त कामला

VARIOUS CLASSIFICATION:-

कामला

- अल्प पित्त कामला
  - शाखाश्रय कामला
  - only बाह्य रोगमार्ग has yellowish discoloration
- बहु पित्त कामला
  - ~~शाखा~~ कोष्ठ - शाखाश्रय
  - Yellowish discoloration of बाह्य and आभ्यन्तर रोगमार्ग

BiophilicBAMS

कामला

स्वतन्त्र	परतन्त्र
* without suffering from पाण्डु, person develops कामला (Acc. to अ. हृ. निदान स्थान पाण्डुरोग अध्याय)	* पाण्डु रोग leads to the development of कामला
eg:- शाखाश्रय कामला	eg:- कोष्ठ - शाखाश्रया कामला.

शाखाश्रय कामला

निदान:-

कफकर and वातकर निदान; leads to शाखाश्रय कामला.

रूक्षशीतगुरुस्वादु व्यायामैः वेगनिग्रहैः।

वातकर निदान like - रूक्ष, शीत, व्यायाम, वेगनिग्रह

कफकर निदान like - शीत, स्वादु and गुरु आहार सेवन.

संप्राप्ति:-

कफ सम्मूर्च्छितो वायुः स्थानात्पित्तं (bile) क्षिपेद्बली (वात)।

कफ obstructs the वात, at the place where bile flows, and hence it leads to more वात प्रकोप.

संप्राप्ति:-

निदान सेवन
↓
vitiation of both कफ & वात
↓
कफ obstructs the path of वात
↓
leads to शाखाश्रय कामला।

BiophilicBAMS

लक्षण :-

हारिद्र नेत्र मूत्र त्वक् श्वेत वर्चस्तदा नरः ॥
तिलपिष्टनिभं यस्तु वचः सृजति कामली।

* Yellowish discoloration of नेत्र, मूत्र, त्वक्
* clay colored stools - श्वेत वर्चस्
* तिलपिष्टनिभं - stools resemble the paste of तिल

लक्षण according to दोष :-

भवेत् साटोप विष्टम्भो गुरुणा हृदयेन च।
दौर्बल्याल्पाग्नि पार्श्वार्ति हिक्का श्वासारुचि ज्वरैः॥

Because of वात ↑
- आटोप - Gurgling sound
- विष्टम्भो - constipation
- दौर्बल्य - weakness
- हिक्का - Hiccups
- ज्वरैः - due to displacement of पित्त.

Because of कफ ↑
- हृदय गुरुत्व - heavyness of हृदय
- अल्प अग्नि - due to कफ ↑
- श्वास - dyspnoea
- अरुचि - aneroxia.

Reason for clay colored stool - श्लेष्म वर्चस् :-

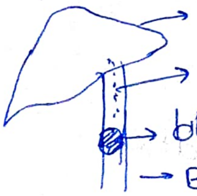

* Due to obstruction ; bilirubin & biliverdin cannot reach the deodenum
* Hence ~~Bile~~ due to absence of bile pigments, feaces cannot have normal color; hence becomes clay colored.

BiophilicBAMS

Treatment for शाखाशय कामला :-

* मातुलुङ्ग स्वरस along with पिप्पली, मरीचा ~~and~~
  ↳ leads to वात अनुलोमन
  (पिप्पली, मरीचा) ↳ decreases कफ hence removes blockage

* नागर + कटु, तीक्ष्ण, उष्ण लवण रस + अम्ल द्रव्य

Duration of treatment :-
treatment is given until, the normal color of वर्चस is restored.

कुम्भकामला

कुम्भ + कामला => कामला which has कोष्ठ आशय.
Here कुम्भ ~~is~~ means कोष्ठ - stomach.

उपशाया च शोफाढ्या सा कृच्छ्रा कुम्भकामला ।
(अ. हृ. नि. 13)

The patients when presents with severe form of शोफ, it is then called कुम्भ कामला.

Acc. to चरक चिकित्सा स्थाना :-
कालान्तरात् खरीभूता कृच्छ्रा स्यात् कुम्भकामला ।
कुम्भकामला is the one which is
कालान्तरात् - has chronic development.
खरीभूता [has increased रूक्षता
[It is कठोरताम् उपगता - deep seated.

It is कृच्छ्रसाध्या.

उपद्रव of कुम्भकामला :-
छर्दि अरोचक हृल्लास ज्वर क्लमनिपीडित: ।
नश्यति श्वास कासार्तो विड्भेदी कुम्भकामली ॥
complications of कुम्भकामला is vomiting, aneroxia, nausea, fever, exhaustion, squeezing pain, dyspnoea, cough, constipation.

BiophilicBAMS

साध्य - असाध्यता of कामला / लक्षण of कुम्भकामला

कृष्णपीतशकृन्मूत्रो भृशं शूनश्च मानवः।
स रक्ताक्षिमुखच्छर्दिविण्मूत्रो यश्च ताम्यति॥
दाहारुचितृष्णानाह तन्द्रा मोह समान्वितः।
नष्टाग्निसंज्ञः क्षिप्रं हि कामलावान् विपद्यते।
साध्यानामितरेषां तु प्रवक्ष्यामि चिकित्सितम्॥

The असाध्य लक्षण of कामला are;

* Blackish or yellowish discoloration of feaces, urine
* Early development of oedema/swelling (शून)
* Reddish discoloration of eyes, mouth/oral cavity, vomit (hematemesis), feaces, urine.
* Darkness before eyes (ताम्यति)
* Loss of consciousness (~~नष्टाग्नि~~ नष्ट संज्ञा
* Complete loss of अग्नि.
* Progresses quickly.

If the patient doesn't have all these लक्षण, then it is considered as साध्य.

हलीमका

यदा तु पाण्डु वर्णः स्यात् हरित श्याव पीतकः।
बलोत्साहा क्षयः तन्द्रा मन्दाग्नित्वं मृदुज्वरः॥
स्त्रीषु अहर्षो अङ्गमर्दश्च श्वासः ~~कास~~ तृष्णा ऽरुचिभ्रमः॥
हलीमकं तदा तस्य विद्यादनिलपित्ततः।

हलीमका has लक्षण like

* Yellowish discoloration, greenish, blackish and pale discoloration
* बल क्षय, उत्साह क्षय,
* Exhaustion, ↓ अग्नि, Light/slight fever

* Loss of libido - स्त्रीषु अहर्षेषु.
* Malaise/ body pain - अङ्गमर्द.
* Dyspnoea
* Excessive thirst
* Anorexia
* Giddiness.

दोष involved - वात + पित्त.

Treatment - गुडूची स्वरस with क्षीर and माहिष घृत.

पानकी

* Explained by Madhava Nidana.

सन्तापो भिन्नवर्चस्त्वं बहिरन्तश्च पीतता ।
पाण्डुता नेत्रयोर्यस्य पानकी लक्षणं भवेत् ॥

When the patient develops severe diarrhoea along with कामला then that condition is called as पानकी

BiophilicBAMS